युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 38 | 07 से 13 जनवरी, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 | पौ. कृ. 12

देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे सैकड़ों आर्य भजनोपदेशकों की उपस्थिति में

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

सैकड़ों भजनोपदेशकों को नकद राशि तथा प्रशस्ति पत्र देकर किया गया सम्मानित

शराबबन्दी, गौहत्या तथा आर्य भारत के मूल निवासी हैं को लेकर पास किये गये प्रस्ताव

भजनोपदेशकों ने किया आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार तथा वैदिक संस्कृति को जीवित रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य

– स्वामी आर्यवेश

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय भारतीय आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन का भव्य समापन समारोह हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। 1 से 3 जनवरी, 2016 तक आयोजित यह भव्य ऐतिहासिक सम्मेलन स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक में आयोजित किया गया था। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौ. हरिसिंह सैनी, विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध समाजसेवी तथा आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के राष्ट्रीय प्रधान श्री सतपाल मधुर, परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ, परिषद् के कोषाध्यक्ष श्री नरेश दत्त, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुखपाल आर्य, श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी चन्द्रवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, आर्य समाज हिसार के कोषाध्यक्ष सेठ बजरंग लाल, श्री उपेन्द्र बठिण्डा, श्री

सहदेव बेधड़क, आर्य समाज नरवाना के प्रधान श्री इन्द्रजीत नरवाना, राष्ट्रपति से सम्मानित श्री सीताराम शर्मा, श्री ताराचन्द्र जालन्धरी, श्री विरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, आचार्य सन्तराम जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा प्रवेश आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य सहित अनेकों वरिष्ठ भजनोपदेशक तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में आर्य भजनोपदेशकों की प्रशस्ति करते हुए उनके द्वारा आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों का प्रचार–प्रसार तथा भारतीय संस्कृति की अपने मधुर भजनों तथा उपदेशों द्वारा की जा रही रक्षा तथा उन्नति की प्रेरणादाई गाथा का दिग्दर्शन कराते हुए उनके बहुमूल्य योगदान की चर्चा की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के कर्मठ भजनोपदेशक अपनी विद्वतापूर्ण शैली से श्रोताओं के मन पर गहरा असर डालते हैं और उपस्थित जनसमूह का मनोरंजन कराते हुए आर्य समाज के श्रेष्ठ विचारों को बड़ी सरल भाषा में श्रोताओं के हृदय में उतार देते हैं। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के माध्यम से इन महान भजनोपदेशकों

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ–1 का शेष

शराबबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित करे केन्द्र सरकार

– सत्यव्रत सामवेदी

आर्य भजनोपदेशक प्रचार के नये माध्यमों में भी दक्षता हासिल करें

– चौ. हरिसिंह सैनी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य पूरा करने के लिए ताकत लगाये आर्य समाज

–डॉ. सुरेन्द्र कुमार

वर्तमान समय में और भी ज्यादा प्रासंगिक है आर्य समाज की विचारधारा

– ठाकुर विक्रम सिंह

भजनोपदेशकों के त्याग व ऋषि के मिशन के प्रति निष्ठा ने ही आमजनों में पहुँचाई आर्य समाज की आवाज

– सतपाल मधुर

नये उपदेशकों को तैयार कर पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी भारतीय भजनोपदेशक परिषद्

– कैलाश कर्मठ

ने देश की आजादी से लेकर अब तक देश के नव निर्माण तथा वैदिक संस्कृति को घर–घर पहुंचाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। स्वामी जी ने कहा कि ऐसे कर्त्तव्य परायण तथा आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित आर्य भजनोपदेशकों को सम्मानित कर हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा हरियाणा के पूर्व मंत्री चौ. हरिसिंह सैनी ने आर्य भजनोपदेशकों को आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण अंग बताते हुए कहा कि आर्य समाज को प्रचार के नये माध्यमों को अपनाकर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में उनका उपयोग करना चाहिए। जिससे आर्य भजनोपदेशकों की प्रतिभा का भरपूर लाभ आर्य समाज को मिल सकेगा। उन्होंने भजनोपदेशकों को सलाह दी कि सोशल मीडिया का उपयोग कर आप अपने कार्यों को और ज्यादा उपयोगी बना सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज की विचारधारा और भी अधिक प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि भजनोपदेशकों का अभिनन्दन तथा सम्मान उनको और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने कहा कि आर्य भजनोपदेशक आर्य समाज की जान है। उनको हर स्तर पर सहयोग प्राप्त होना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण कार्यों का विवरण देते हुए कहा कि आर्य समाज वेदों की मान्यताओं पर विश्वास करता है और ऐसी कोई भी समस्या नहीं है जिसका निराकरण वेदों में उपलब्ध न हो। उन्होंने कहा कि वेदों में विज्ञान का पक्ष बहुत प्रबल है जिसके लिए यदि सरकारें गम्भीरता से कुछ योजनायें बनायें तो सकारात्मक परिणाम हमारे सामने आ सकते हैं और भारत विज्ञान के क्षेत्र में बहुत उन्नति कर सकता है। भारतीय भजनोपदेशक परिषद् के राष्ट्रीय प्रधान श्री सतपाल मधुर ने कहा कि सभी वरिष्ठ भजनोपदेशकों के सम्मान की परम्परा प्रारम्भ की जायेगी जिससे नये भजनोपदेशकों को प्रेरणा मिलेगी तथा उनका उत्साहवर्धन होगा। उन्होंने कहा कि भजनोपदेशक परिषद् सभी उपदेशकों का बीमा करवाने पर विचार कर रहा है तथा किसी भी असामयिक घटना पर सहयोग भी किया जायेगा। परिषद् के महामंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ ने कहा कि आर्य समाज के प्रचार को और अधिक गति देने के लिए नये भजनोपदेशक तैयार करने की योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि नये भजनोपदेशक आधुनिक मीडिया के माध्यमों के प्रशिक्षण से युक्त होंगे तथा उनको हर प्रकार का सहयोग प्रदान किया जायेगा। कार्यक्रम की संयोजिका बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि भजनोपदेशकों का अगला प्रशिक्षण शिविर 8 से 10 जुलाई, 2016 को कलकत्ता में आयोजित किया जायेगा।

इस अवसर पर वरिष्ठ भजनोपदेशकों व कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया जिनमें मुख्य रूप से 70 वर्ष से आर्य समाज की भजनों के माध्यम से सेवा कर रहे श्री कुंवर सुखपाल आर्य व श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर शामिल थे। इन दोनों महानुभावों को प्रशस्ति पत्र व ग्यारह–ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट की गई।

इस अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश फाण्डेशन के माध्यम से व आर्य समाज हिसार के सहयोग से इस त्रिदिवसीय आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, हरियाणा सरकार में पूर्व मंत्री चौ. हरिसिंह सैनी–हिसार, सेठ बजरंग लाल गोयल, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, स्वामी चन्द्रवेश आदि ने आर्य समाज के वरिष्ठ व नवोदित भजनोपदेशकों को सम्मानित किया। जिनमें सर्वप्रथम भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् की अन्तरंग कार्यकारिणी को सम्मानित किया गया। फिर सदस्यों व सहयोगियों को सम्मानित किया गया। सर्वप्रथम प्रधान श्री सत्यपाल मधुर जी, उप्रपधान चौ. सहदेव बेधड़क, महामंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ, कोषाध्यक्ष श्री नरेश दत्त आर्य, उपमंत्री उपेन्द्र, कार्यकारिणी के विशेष सदस्य श्री कुलदीप आर्य–बिजनौर, श्री नरेश निर्मल–बुढ़ाना, श्रीमती पुष्पा शास्त्री, श्री हरिसिंह आर्य–बहरोड़, श्री कुंवर उदयवीर आर्य–मथुरा, श्री नारायण सिंह–नजफगढ़, महाशय नन्दराम वैद्य, श्री सुखपाल विश्वकर्मा–सहारनपुर, श्री ज्ञानेन्द्र लेबतिया, श्री रामनिवास आर्य–पानीपत, श्रीमती संगीता आर्या, श्वेता आर्या, सीतादेवी आर्या–अमरोहा, क्षमा पूखर आर्या–इटावा, श्री रामेश्वर आर्य व सुनील दत्त शास्त्री–उचाना, श्री सतीशसत्यम, श्री सतीश सुमन, श्री सुभाष राही, श्री ताराचन्द जालन्धरी–बहरोड़, श्री अजय आर्य–मेरठ, श्री कुलदीप विद्यार्थी–बिजनौर, जसविन्द्र आर्य–करनाल, श्री नरेन्द्र दत्त आर्य–बिजनौर, श्री रमेश चन्द्र स्नेही–सहारनपुर, श्री राजकुमार तेवतिया, श्री सहदेव सरस–एटा, श्रीमती दर्शन आर्या–बुलन्दशहर, कु. योगिता आर्या–मथुरा, श्रीमती शकुन्तला देवी–दिल्ली, श्री मोहन लाल आर्य–बुलन्दशहर, श्री सीताराम शर्मा–जखराना के अतिरिक्त वयोवृद्ध भजनोपदेशकों का भी सम्मान हुआ जिनमें श्री मामचन्द पथिक, श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर व सुखपाल आर्य प्रभाकर, श्री खेमसिंह आर्य–पलवल, श्री नत्थाराम भारती, श्री रामरख आर्य को सम्मानित किया गया।

इनके अतिरिक्त सर्वश्री अशोक प्रबोध, अमीचन्द्र आर्य, उपकार आर्य, श्रीमती उषा आर्या, कृष्ण कुमार आर्य, कुलदीप चौधरी, दर्शनदेव आर्य, महेन्द्र पाल आर्य, मांगेराम आर्य, राकेश आर्य, राजवीर सिंह, राजकुमार आर्य, रणधीर सिंह, राममुनि उपदेशक, राजेन्द्र राणा, राजेन्द्र आर्य, वेदपाल आर्य, रामवीर आर्य, विजयपाल आर्य, श्रीमती शशि प्रभा आर्या, सत्यदेव शास्त्री–बरेली, सत्यप्रकाश आर्य, हवासिंह तूफान, सोमपाल आर्य, सुमन कुमार झा, सुषमा शर्मा, ब्र. सत्यकाम, हरीश कुमार आदि को सम्मानित किया गया।

इससे पूर्व 1 जनवरी, 2016 को तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ किया गया। ध्वजारोहण महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज को अपने कृण्वन्तों विश्वमार्यम के लक्ष्य की पूर्ति के लिए कटिबद्ध होकर पूरी ताकत लगानी चाहिए क्योंकि आज पूरे विश्व में शांति तभी स्थापित हो सकती है जब कृण्वन्तों विश्वमार्यम् की भावना स्थापित हो। उन्होंने कहा कि आर्य समाज वर्तमान जाति व सम्प्रदाय विहीन समाज की स्थापना के लिए ऋषि दयानन्द के दिखाये मार्ग पर चल रहा है और उसी कड़ी में यह कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। उन्होंने आर्य समाज के क्षेत्र में भजनोपदेशकों की भूमिका की भी प्रशंसा की तथा उनको और अधिक कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संयोजन स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन की महामंत्री बहन प्रवेश आर्या ने किया तथा मंच का संचालन भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री कलकत्ता से आये श्री कैलाश कर्मठ ने किया।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में युवा संन्यासी तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भजनोपदेशकों के महत्त्वपूर्ण भूमिका को बल प्रदानकरते हुए उन्हें और अधिक कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आज हमारा देश संक्रमण काल से गुजर रहा है। चारों तरफ भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में अनर्गल बातें जोड़कर हमारे इतिहास को विनष्ट करने की कोशिश की जा रही है। युवा शक्ति पाश्चात्य सभ्यता तथा नशे के जाल में फंसती जा रही है। ऐसी विषम परिस्थितियों में आप सब का उत्तरदायित्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि आप सबको पूर्ण सहयोग प्रदान किया जायेगा और आप सब भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए और आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए कटिबद्ध होकर कार्य करें। आप सबके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। स्वामी जी ने कहा कि पूर्व में भी आर्य समाज के माध्यम से आर्य विद्वानों ने तथा भजनोपदेशकों ने देश के युवाओं को सही मार्ग दिखाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शहीदे आजम भगत सिंह के पिता भी आर्य समाज के उपदेशक रहे हैं तथा स्वामी भीष्म जी व चौ. पृथ्वी सिंह बेधड़क आदि का देश की आजादी में बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्वामी जी ने आर्य भजनोपदेशकों को आर्य समाज की रीढ़ बताया। इससे पूर्व आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। परिषद् के कोषाध्यक्ष बिजनौर से पधारे श्री नरेश दत्त ने आर्य समाज की भावी योजनाओं की जानकारी सभी उपदेशकों को दी।

इस अवसर पर श्री कुलदीप आर्य, श्री नरेश निर्मल, श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर, श्री सत्यप्रकाश–बिहार, श्री रामेश्वर आर्य, श्री सतपाल मधुर–दिल्ली तथा नारायण सिंह–नजफगढ़ ने अपने ओजस्वी विचारों से जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर सैकड़ों व्यक्तियों के अतिरिक्त आर्य समाज के लगभग एक सौ से अधिक भजनोपदेशक उपस्थित थे।

2 जनवरी, 2016 को त्रिदिवसीय भजनोपदेशक प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन का कार्यक्रम श्री सत्यपाल जी मधुर की अध्यक्षता में संचालित हुआ। इस अवसर पर विशेष यज्ञ के उपरान्त स्कूलों में बच्चों को पढ़ाये जाने वाले अनर्गल पाठ्यक्रमों को पुस्तकों से हटाये जाने की विशेष माँग की गई। इन पुस्तकों में आर्य भारत के मूल निवासी नहीं हैं तथा वे बाहर से आये हैं के सहित अनेकों तथ्यहीन बातें बच्चों को पढ़ाई जा रही हैं। इस सम्बन्ध में प्रस्ताव पास करके प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन भेजकर इन अनर्गल तथ्यों को पाठ्यपुस्तकों से हटाने की माँग की गई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि सर्वप्रथम इस देश का नाम आर्यावर्त ही प्रसिद्ध है। इसलिए आर्यावर्त में रहने वाले सभी व्यक्ति आर्य ही थे। उन्होंने पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाई शेष पृष्ठ 7 पर

मकर संक्रान्ति महोत्सव - त्रिसूत्री महापर्व

- चमनलाल

भारतवर्ष त्यौहारों, पर्वों का एक अनन्त समुद्र है, जिसमें अनेक मंगलमय पर्वों, त्योहारों की नदियों का पावन संगम निरन्तर होता रहता हैं इन्हीं पर्वों में हमारे विशाल देश की महानता, इन्द्र धनुषी आभा और अखण्डता परिलक्षित होती है। कहां तक गिनाएं जितने अधिक त्योहार हमारे देश में मनाएं जाते हैं, शायद ही विश्व के किसी और देश में मनाए जाते हों। सच तो यह है कि ये पर्व ही हमारी प्राचीन संस्कृति की समृद्धि को उजागर करते हैं। शताब्दियों से व्यक्ति समाज और राष्ट्र का जीवन इन्हीं से प्रेरित होते रहे हैं। हमारे सभी त्योहार महापुरुषों के जन्म निधन, उनके उदात्त विशद जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं से जुड़े हैं और साथ ही जुड़े हैं प्रकृति की सुन्दर महामाया से। अतः ये पर्व हमारी संस्कृति के पिरचायक हैं, दर्पण हैं और इसीलिए हमारे जीवन का अंग भी हैं।

इन्हीं त्योहारों की श्रृंखला में एक स्मरणातीत काल से चले आ रहा महत्वपूर्ण त्योहार 'मकर संक्रांति' भी है। इस त्योहार की एक विशेषता यह है कि यह प्राचीनतम होते हुए भी अन्य त्योहारों की न्याई किसी जाति, वर्ग, देश, महापुरुष विशेष से सम्बन्धित नहीं है और इसीलिए यह काल की सीमाओं से भी बंधा नहीं है। यह प्राकृतिक ऋतुपर्व प्राचीनतम त्योहार है जो सृष्टि के आरम्भ से ही मानव जाति से जुड़ा है।

आयुर्वेद के अनुसार प्रकृति संरचना को व धातुओं के गुण दोषों को ध्यान में रखकर 6 ऋतुएं स्वीकार की गई हैं। जिन्हें सामवेद मन्त्र616 में इस प्रकार वर्णन किया गया है :-

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षायण्नु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।।

इन्हीं 6 ऋतुओं- वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर को यजुर्वेद (22/31) में चान्द्र वर्ष गणना के अनुसार दो-दो आदिदयो अथवा दो-दो मास के जोड़ों को मधु-माधव, शुक्र-शुचि, नभ-नभस्यः, ईष-ऊर्जा, सह-सहस्य, तप-तपस्या कहा गया है।

'मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा, शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभते स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोजार्य स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऊँ हसस्पतये स्वाहा।'

आयुर्वेद ने चन्द्रमा एवं सूर्य के काल, विभाग करने के गुण के कारण दक्षिणऔर उत्तर दो अयन माने हैं। दक्षिणायन में वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुएं होती हैं। इसको ही विसर्ग काल कहते हैं।

इस काल में चन्द्रमा का प्रकाश अधिक और सूर्य का क्षीण होता है।इससे पृथ्वी और प्राणियों का रस पुष्ट होने से बल बढ़ता है। उत्तरायण में शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म ऋतुएं आती हैं। इसे आदान काल कहते हैं। इस समय सूर्य का बल तेज होता है और सूर्य की प्रखर किरणें पृथ्वी से जलीय अंश को सुखा देती है। आयुर्वेद के अनुसार शीत ऋतु विसर्ग के काल एवं आदान काल को सन्धि वाली ऋतु माना जाता है। मकर संक्रान्ति का पर्व इसी ऋतु में आता है जो प्रायः प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। इस समय शीत ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर होती है। अतः इस पर्व के अवसर पर शीत निवारण के ही उपायों का प्रयोग किया जाता है। अधिक शीत होने के कारण शरीर के अन्दर सेनिकलने वाली गर्मी बाहर निकलने में असमर्थ हो जाती है, जिसके फलस्वरूप जठराग्नि (पाचक शक्ति) बहुत तेज हो जाती है। इसलिए इस समय पौष्टिक आहार करने से शरीर पुष्ट होता है। यदि पौष्टिक स्निग्ध, गरिष्ठ भोजन न किया जावे तो जिस तरह से बर्तन भट्ठी पर चढ़ा होने से गर्म हो जलने लगता है, उसी तरह शरीर भी क्षीण होने लगता है। इसीलिए शरीर रक्षा के लिए तिल आदि गर्म प्रकृति के पदार्थों के नाना प्रकार के व्यंजनों का प्रयोग करते और खिचड़ी आदि का कुछ अधिक प्रयोग इस मौसम में किया जाता है। और इसी तरह गर्म वस्त्रों का प्रयोग करके शरीर रक्षा की जाती हैं। समृद्ध लोग दान की भावना और मनुष्यता के नाते अभावग्रस्त और साधनहीन लोगों की सर्दी की पीड़ा को दूर करने के निमित्त यही गर्म खाद्य पदार्थ और कम्बल, स्वेटर लिहाफ आदि बांटते हैं।

उत्पत्ति- यह सृष्टि भगवान की बड़ी अद्भुत रचना है और प्रभु के कौशल्य का प्रतीक है। मकर संक्रांति की उत्पत्ति पृथ्वी और सूर्य की नैसर्गिक गति और उस महाकर्ता के अभेद विधान में बंधकर चलने के कारण हुई है। पृथ्वी जो आठ हजार मील मोटी और चौबीस हजार मील परिधि वाली है, अपनी कीली पर भ्रमण करके चौबीस घण्टे में दिन और रात बनाती है। यही पृथ्वी जब सूर्य के गिर्द (सूर्य पृथ्वीसे तेरह लाख गुना बड़ा है) घूमती है, तो चक्र पूरा करने में 365 दिन और कुछ घण्टे लगाती है, इसे एक सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी जिस परिधि पर सूर्य के गिर्द परिभ्रमण करती है, उस क्रांति वृत को 12 भागों में कल्पित कियागया है। उन 12 भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गये हैं- मेष, वृष, मिथुन, मीन आदि। यही 12 राशियाँ हैं। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी में संक्रमण करती है तो उसे संक्रांति कहते हैं इस प्रकार प्रतिमास संक्रांति आती है परन्तु मकर संक्रान्ति का महत्व अत्यधिक इसलिए है कि इस समय सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करने लगता है। उत्तर की ओर गति उन्नति और अभ्युदय का द्योतक है। इस समय प्रकाश बढ़ता जाता है और अन्धेरा कम होने लगता है या यूं कहिये कि दिन बढ़ने और रात घटने लगती है। यह सब इस कारण होता है कि सूर्य 6 मास दक्षिण से निकलता दिखाई देता है जिसे दक्षिणायन कहते हैं इसमें तीन मौसम वर्षा, सर्दी, हेमन्त होता है और यही सूर्य 6 मास उत्तर की ओर से उगता दिखाई पड़ता है जिसे उत्तरायण कहते हैं, इसमें तीन ऋतुएं शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म होता है।

मकर संक्रान्ति के तीन रूप

यह महत्वपूर्ण पर्व तीन रूपों में (अध्यात्मिक, आधिभौतिक और सामाजिक) मनाया जाना चाहिए अतः इसे तीन सूत्री पर्व कहना भी अनुचित न होगा।

(क) आध्यात्मिक :- ''देवस्य पश्य काव्यम् न ममार न जीर्यति।'' अथर्व 10-8-32

भगवान की इस काव्यमय सृष्टि रचना के अद्भुत कौशल को देखकर उसकी सत्ता में विश्वास करके, उसका बार-बार धन्यवाद देना चाहिए कि किस प्रकार प्रभु के विधि-विधान में बंधे ये पृथ्वी, सूर्य आदि जड़ पदार्थ इस समय अन्धकार और शीत से मुक्त करा प्रकाश और सुन्दर बसन्त ऋतु की ओर ले जाते हैं।

(ख) आधिभौतिक :- ''सर्व अन्यत् त्यजेत् शरीरमनुपातयेत् अनमीदा स्व क्षेत्रे विराज।''

इस समय अत्यधिक शीत होने के कारण हमें इस भगवान द्वारा दिये गये उत्तम शरीर की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए। अपने आहार व्यवहार का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यही योनि भगवान को प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। और इसीलिए वेद में इसे 'देवानां प्रियतम' कहागया है, इसके स्वस्थ रहने पर हम सब धर्म परहित कार्यों को कर सकते हैं।

''शरीरमाधम् खलु धर्म साधनम्।''

(ग) सामाजिक '- ''पक्षेभिरपि कक्षेभिः संरभामहे।'' ऋ. 10-134-7

अर्थात् हमें चाहिए कि अभावग्रस्त साधनहीन लोगों को साथ लेकर चलें। इस शीत काल में जहाँ हम सम्पन्न लोग गर्म, पौष्टिक पदार्थों का सेवन करके अपने शरीर की रक्षा करते हैं ठीक इसी प्रकार दान रूप में जरूरतमंद को गर्म वस्त्र, स्वेटर, कम्बल, लिहाफ आदि देकर और तिल, गुड़ आदि के बने व्यंजन इन अभावग्रस्त लोगों को देकर इनकी रक्षा करने का यत्न करें।

मकर संक्रान्ति के पहले लोहड़ी नाम का त्योहार मनाने की रीति भी हमारे देश में प्रचलित हैं। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के समान अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है और इसमें गन्ने को तपाकर, इन्हें भूमि पर पटका कर आनन्द मनाया जाता है। यह भी मकर संक्रान्ति का एक अपभ्रंष रूप है। मकर संक्रान्ति को माघी भी कहते हैं, क्योंकि उसी दिन से माघ मास आरम्भ हो जाता है।

अतः हमें त्योहारों को बड़ी श्रद्धा, निष्ठा और उत्साह से मनाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि ये मृत प्राय जाति को भी नव जीवन का संचार करने की शक्ति रखते हैं, आज हमें इसकी अत्यन्त आवश्यकता भी है।

- एच-64, अशोक विहार, दिल्ली-52

Vedic Concept of Creation

The theory of evolution is one of the greatest revelations of modern scientific thought. Various philosophers, physicists and scientific men, working independently of one another and in different domains of Nature, have, established the truth of this theory, so that instead of remaining a theory, there are evident signs of its soon becoming a proven fact. The theory enunciates the great truth, that all complexity came out of simplicity heterogeneity out of homogeneity, perfection out of imperfection, variety out of uniformity. All this beauty and grandeur with apparent paradoxes is the result of the struggle which Nature wages towards the attainment of order and perfection.

In the beginning of the present order of things, in some far-off period, in some distant point of time, the whole universe existed in a state of paramanu (atoms), invisible, subtle and unmanifested. That which we know as the earth, the sun, the moon and the stars was then, in the beginning of the kalpa, but formless matter in its most elemental and attenuated condition- ether, no doubt our ancient Aryan philosophers called it-non-being (asat). We involuntarily exclaim with our glorious Rishis:- "Before, O Child, this was a mere state of non-being (asat), one only, without a second. Thereof verily others say: Before this was non-being, one alone, without a second, from that non-being proceeds the state of being."

There is nothing, therefore, inappropriate in the name which the ancients gave this ether-spirit, viz., the anima mundi-the divine inflatus, the Hiranyagarbha. The Aryan title Hiranyagarbha-the womb of light-is far more expressive and scientific than the name ether.

The Evolution of Heat and Light

In the beginning, there was neither nought nor aught.
Then there was neither sky nor atmosphere above.
What then enshrouded all this universe?
In the receptacle of what was it contained?
Then was there neither death nor immortality,
Then was neither day, nor night, nor light, nor darkness,
Only the Existent One breathed calmly, self-contained. (Rig. 10.121.1)

First in the beginning, therefore, was this Hiranyagarbha, one only without a second. The next step towards evolution was the generation of heat. The atoms of ether came closer together and united in different proportions and formed molecules. Thus the various elements were first evolved out of the homogeneous atoms of ether. This union and contraction, gave rise to a great deal of heat.

This intense heat raised the elements to a state of gaseous incandescence, and the whole mass would be now a luminous vapour of all elements, iron, gold etc. This self-luminous vapour has been called by the Aryan Rishis Prajapati (the Lord of all creations) and modern scientists have called such incandescent vapours nebulae (clouds), from their resemblance to white clouds. Thus, there arose light where there was formerly only darkness.

The findings of astrophysicists of today have now reaffirmed the statements of the Vedic declarations, with the help of every sophisticated and ultra-modern scientific equipment. They have gathered information about the circulation of energy and material in space. Astrophysicists are studying how the universe began. Did it all begin with a terrific explosion, the "big-bang"? With the aid of the radio telescopy, the scientists in Effelsberg can pick up signals that were sent 15,000 million years ago-when the "big-bang" is believed to have taken place. From these signals and what is now going on in space, it is possible to look back to the beginning of evolution, as if through a window in time: one can reconstruct the "big-bang".

Dr. Schmid-Burgk describes what is supposed to have taken place: "The cosmic material was originally densely packed and very hot. Because of the high temperatures, the atoms had been broken down into nuclei and electrons; even earlier, the nuclei of the atoms had been reduced to their elements, the protons and neutrons. During the hottest moments, the first few fractions of microseconds of the "big-bang', not even individual protons and neutrons could exist, but only what they are made up of, the quarks." The signals from space, however, also tell how the universe cooled down, expanded, how stars were born and died. With the passage of billions and billions of years, the time lapse has resulted slowly but surely in the loss of heat, the cooling down of planets which were all a part of the "Fire ball" once.

The moon was also at one time a part of the earth, and of course being but a smaller body, it has lost almost all its heat. The sun, which was the nucleus of the primitive rotating nebula, still retains a great deal of its heat, but it is not so intense as it must have been in the beginning. However, a time will come when the sun will cool down to darkness and no more be a fountain of light and heat to its planets, when there will be perfect darkness and intense cold-in fact, when this present cycle will come to an end. Long, long before that time arrives, this our earth will become a desolate wilderness- lifeless, silent and obscure. Seas, rivers, lakes, and oceans will be congealed to ice, even the very air will be a mass of solid. That time, according to Aryan calculation, is 2,333,227,018 years distant.

Modern scientific findings have reaffirmed the statement of this Vedic declaration.

- ***Satyakam Vidyalankar***

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन के कुछ महत्त्वपूर्ण दृश्य

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन में भजनोपदेशकों तथा कार्यकर्ताओं के सम्मान के कतिपय चित्र

एएमयू में एकता का पाठ पढ़ा गए स्वामी अग्निवेश

पॉलिटेक्निक के सभागार में इंटरफेथ अंडरस्टेंडिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

एएमयू में राष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित करते सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश

अलीगढ़ : एएमयू पॉलिटेक्निक के सभागार में गुरुवार को 'इंटरफेथ अंडरस्टेंडिंग' पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यहां आर्य समाजी नेता स्वामी अग्निवेश एक शिक्षक की भूमिका में नजर आए और सभी को एकता का पाठ पढ़ाया।

अंग्रेजी से व्याख्यान की शुरुआत करने वाले स्वामी बीच में रुके और बोले एएमयू में भी अंग्रेजी झाड़ते रहें तो आनंद नहीं आएगा। कहा कि इस संस्था के जन्मदाता सर सैयद अहमद खां और आर्य समाज के जन्मदाता स्वामी दयानन्द सरस्वती दोनों ही भारतीयों की सोच में परिवर्तन लाना चाहते थे। उन्होंने कहा कि मेरा जन्म गुजरात के ब्राह्मण परिवार में हुआ, मुझे फैसला नहीं करने दिया कि मैं हिन्दू हूं या मुस्लिम। भूत का भय दिखाकर हनुमान चालीसा पढ़ाई जाती थी, तो मेरे भाई बहन अपने हिस्से की मुझसे ही पढ़वाते थे। नाना के घर में दलित काम करते थे, जो बंधुआ मजदूर थे। आज प्रोफेसर पद त्याग कर व वकालत का पेशा छोड़कर बंधुआ मजदूरों के लिए काम कर रहा हूं। चार साल की उम्र में पिता की मौत हो गई थी, स्कूल से सीधे मां के पास आता था, लेकिन सप्ताह में तीन दिन मुझे मां से दूर रखा जाता। मेरी मां भी अछूत बना दी, क्योंकि मैं दलितों से मिलता था। जब मैंने दयानंद सरस्वती की लाइफ ऑफ ट्रूथ पढ़ी तो आंख खुलीं। उन्होंने कहा नमाज तो एक साथ अदा कर लेते हैं लेकिन नमाज के बाद एक रास्ते पर नहीं चलते। स्वामी जी ने कहा कि मंदिर व मस्जिद को इंसान बनाता है, लेकिन हम ईश्वर के बनाए इंसान को मंदिर–मस्जिद की एक ईंट के लिए मार देते हैं। मलेशिया के पूर्व विदेश मंत्री डॉ. सैयद हामिद अलबर ने कहा कि हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी समुदायों के बीच आपसी विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए विचार–विमर्श करते रहना चाहिए। विश्व संसद, अमेरिका के अध्यक्ष प्रो. ग्लेन टी मार्टिन ने कहा कि कुछ देश तेल उत्पादक देशों पर अपना नियंत्रण करना चाहते हैं।

मौलाना असगर इमाम सलफी ने कहा कि इस्लाम धर्म सभी के साथ प्रेम और सद्भाव का संदेश देता है। प्रो.राशिद शाज ने कहा कि मुस्लिम समाज तारीख के बुरे दौर से गुजर रहा है। दुनिया के प्राकृतिक संसाधन मुसलमानों के कदमों में हैं जिसको नष्ट किया जा रहा है। संचालन डॉ. जकी किरमानी ने किया।

जब भावुक हो गए स्वामी जी :– स्वामी अग्निवेश ने भट्ठे पर काम करने वाले मजदूरों की व्यथा को भी सामने रखा। बोले मजदूरों को जब एक दिन पैसा नहीं मिलता है तो खाने तक के लाले पड़ जाते हैं। बच्चा मां से खाना मांगता है, तो पहले वह पैसा न होने का हवाला देकर सुला देती है। बार–बार बच्चा खाना मांगता है, तो वह उसे चांटा मारकर सुला देती है। यह कहते स्वामी भावुक हो गए, बोले हमें ऐसा समाज बनाना चाहिए जहां सब एक समान रहें।

मोदी पर हमला :– स्वामी अग्निवेश ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर हमला बोला, कहा कि चुनाव से पहले गाय का मुद्दा बनाकर गंदी राजनीति की गई थी। पिंक रिवोल्यूशन की बात करते थे। मोदी को अब क्या लकवा मार गया है। अब क्यों नहीं इस पर कुछ हो रहा। कहा, कुरैशी समाज गौहत्या के मामले में हमारे साथ आ रहा है।

पीकेपी के नाम से बने फिल्म :– स्वामी अग्निवेश ने कहा कि हर नौजवान को ओएमजी और पीके फिल्म देखनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने आमिर खान को बधाई भी दी। पीके फिल्म को उन्होंने पाखण्ड खंडन नाम भी दिया। बताया कि एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार के कुम्भ मेला में पाखण्ड खंडित पताका (पीकेपी) लगाई थी।

आरटीआइ के दायरे में हो दल :– स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि गरीब लोगों का चुनाव लड़ना आसान नहीं है, एमपी, एमएलए चुनाव का जो खर्च दिखाता है, वहीं से भ्रष्टाचार की शुरुआत होती है। मांग की कि पार्टी का खर्च भी उम्मीदवार के खर्च में जुड़ना चाहिए। राजनैतिक दल आरटीआई के दायरे में आने चाहिए, बहुत भ्रष्टाचार रूक जायेगा।

केजरीवाल ने चंदे से बनाई पार्टी :– स्वामी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से भी इंडिया अंगेस्ट करेप्शन के चंदे में आए साढ़े पांच करोड़ का हिसाब मांगा। कहा, केजरीवाल ने इसी चंदे से पार्टी बनाई, इस धन का हिसाब दें। वाराणसी चुनाव में हुए खर्च का भी केजरीवाल से हिसाब मांगा।

।। ओ३म् ।।

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी सम्वत् 2072–73 तदनुसार सन् 2016 ई.

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
1.	मकर संक्रान्ति	माघ बदी-5	2072	14-01-2016	गुरुवार
2.	वसन्त पंचमी	माघ सुदी-5	2072	12-02-2016	शुक्रवार
3.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-8	2072	02-03-2016	बुधवार
4.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-10	2072	04-03-2016	शुक्रवार
5.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी-13	2072	07-03-2016	सोमवार
6.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-3	2072	11-03-2016	शुक्रवार
7.	मिलन पर्व/नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-15	2072	23-03-2016	बुधवार
		चैत्र बदी-1		24-03-2016	गुरुवार
8.	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव-सम्वत्सर)	चैत्र सुदी-1	2073	08-04-2016	शुक्रवार
9.	वैशाखी	चैत्र सुदी-7	2073	13-04-2016	बुधवार
10.	रामनवमी	चैत्र सुदी-9	2073	15-04-2016	शुक्रवार
11.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी-3	2073	05-08-2016	शुक्रवार
12.	वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-15	2073	18-08-2016	गुरुवार
13.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-8	2073	25-08-2016	गुरुवार
14.	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी-10	2073	11-10-2016	मंगलवार
15.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी-11	2073	12-10-2016	बुधवार
16.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-15	2073	30-10-2016	रविवार
17.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष बदी-10	2073	23-12-2016	शुक्रवार

विशेष टिप्पणी : 1. आर्यसमाजें एवं आर्य जन इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाएं।

2. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, (निकट रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2,
दूरभाष : 23274771, 23260985

गौसंरक्षण से प्रदूषण को रोका जा सकता है

जयपुर : आर्य समाज, आदर्श नगर और राजापार्क व्यापार मंडल की ओर से गौ हत्या और गौ मांस के निर्यात के विरोध में बुधवार को धरना दिया गया। धरने को संबोधित करते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति पानाचंद जैन ने कहा कि गौ मांस का निर्यात, गौ हत्या या फिर किसी भी प्राणी की हत्या करना संविधान के विरुद्ध है। कोई भी नागरिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर संविधान का उल्लंघन नहीं कर सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने कहा कि आर्यावर्त आर्यों का मूल स्थान है। आर्य बाहर से नहीं आए हैं। 19वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द ने पश्चिम के इतिहासकारों को चुनौती देते हुए कहा था कि आर्यों का मूल स्थान तिब्बत था। आर्य वेदानुयायी और याज्ञिक थे। यज्ञ गौ घृत के बिना नहीं होता। गौ संरक्षण के प्रचारक सीता गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण को रोकने का एकमात्र उपाय गौ संरक्षण है।

गौसंरक्षण से ही मानव कल्याण सम्भव

समस्तीपुर : शहर के बहादुरपुर स्थित गौशाला में गुरुवार को गोपाष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वेद मंत्रों से यज्ञ हवन पर प्रवचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। गौशाला के मंत्री सुरेश दीक्षित ने अध्यक्षता की। श्री सत्यनारायण ने कहा कि गाय का दूध संतुलित आहार है। इसी के कारण हमारे देश के पहलवान सुशील, योगेश्वर दत्त ने भारत का नाम रोशन किया है। गौ के पालन, संरक्षण से मानव का कल्याण सम्भव है। प्रज्ञा चक्षु विशंभर आर्य ने कहा कि श्रीराम, कृष्ण, शिव के भक्त तब ही भक्त कहलायेंगे जब सभी लोग मिलकर गौहत्या को बंद करायेंगे। मौके पर राम सुमरन सिंह, साधु शरण सिंह, अरुण पोददार, अरुण ठाकुर, कृष्ण कुमार आर्य, माधव कुमार मिश्र आदि ने अपने भजनों से लोगों का मन मुग्ध कर दिया। इस दौरान एक भव्य जुलूस भी निकाला गया। इसमें ऊँट, हाथी, घोड़ा, गाय आदि को शामिल किया गया था। नेतृत्व सुरेश दीक्षित, ओमप्रकाश खेमका, राकेश राज आदि कर रहे थे। इस दौरान श्रद्धा भक्ति से गौ माता की पूजा की गई।

पृष्ठ–2 का शेष

देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे सैकड़ों आर्य भजनोपदेशकों की उपस्थिति में आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

जाने वाली अनेक अनर्गल बातों की चर्चा करते हुए कहा कि यह सब हमारी भारतीय संस्कृति तथा गौरवपूर्ण इतिहास को विनष्ट करने का सोचा समझा षड्यन्त्र है और आर्य समाज इसको कभी भी सहन नहीं करेगा। इस अवसर पर उन्होंने गौ–हत्या तथा गौ–माँस के निर्यात को पूर्ण रूप से बन्द करने की भी माँग की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान से पधारे सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने कहा कि आज सारे देश में नशे का व्यापार बहुतायत से हो रहा है। हमारा युवा नशे के चंगुल में फंसता जा रहा है। सारे देश में बेचैनी का माहौल है जिसका बहुत बड़ा कारण नशा ही है। उन्होंने मोदी जी के नेतृत्व में चलने वाली केन्द्र सरकार से सारे देश में नशाबन्दी के सम्बन्ध में राष्ट्रीय नीति बनाने की माँग की।

इस अवसर पर नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज नवयुवकों को नशे से बचाना सबसे बड़ी आवश्यकता है और आर्य समाज अपने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा तथा युवा निर्माण शिविरों के द्वारा समाज में जागरूकता फैलाने का निरन्तर प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि केन्द्र द्वारा सख्त कानून बनाये जाने के उपरान्त ही देश को नशे से बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार सख्त कानून बनाती है तो हम आन्दोलन करके जागरूकता अभियान को और तेज करेंगे तथा एक सुन्दर समाज की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेंगे।

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आर्य समाज का देश की आजादी में बहुत बड़ा योगदान रहा है। और आज के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि समाज को सुधारने का कार्य यदि कोई कर सकता है तो वह आर्य समाज ही कर सकता है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज युवा निर्माण अभियान के माध्यम से नौजवानों को राष्ट्रभक्ति व देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत कर रहा है।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह ने देश में बंधुआ व बाल मजदूरी जारी रहने पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि इस बुराई को मिटाना आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने अपील की कि आप सब अपने घरों में न बाल मजदूर रखें और न ही औरों को रखने दें।

इस अवसर पर स्वतन्त्रता सेनानी चौ. पृथ्वी सिंह बेधड़क के सुपौत्र श्री सहदेव बेधड़क, श्री रामनिवास आर्य–पानीपत, श्री कुलदीप आर्य–बिजनौर, श्री सुखपाल विश्वकर्मा, श्री अजय आर्य, श्री जसविन्दर तथा सीता आर्या आदि ने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं का मन मोह लिया। मुम्बई से पधारे आर्य समाज के विद्वान् आचार्य सोमदेव का भी सम्मान इस अवसर पर किया गया।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम को सफल बनाने में जहां सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का मार्गदर्शन रहा वहीं बहन पूनम आर्या व बहन प्रवेश आर्या के नेतृत्व में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने भी कड़ी मेहनत की। इनमें सर्व श्री सहसरपाल आर्य, अजयपाल आर्य, मा. सज्जन राठी, मा. अजीतपाल, मा. प्रदीप, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, कुलवीन्द्र आर्य, सोनू आर्य, मोनू आर्य, प्रदीप आर्य, वैद्य शिरोमणि आर्य, धर्मदेव, निशान्त आर्य, प्रदीप व अखिलेश आर्य, रणबीर सिंह, आशीष कुमार, पं. राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, जिले सिंह आर्य व जिले सिंह कुण्डू। बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ताओं ने भी विशेष सहयोग किया जिनमें सोनिया आर्या, सुनीता खासा, रीमा आर्या, शशि आर्या, इन्दू आर्या, पूजा आर्या सुमन आर्या, राजकुमारी आर्या, श्वेता आर्या, पूनम आर्या, मंजू आर्या, अंजलि आर्या, प्रीति आर्या मुख्य रहीं। यह त्रिदिवसीय कार्यक्रम अनेकों आयाम स्थापित करता हुआ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हिसार का विशेष आभार :– सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हिसार के कार्यकर्ताओं की पूरी टीम प्रधान श्री देवेन्द्र सैनी व कार्यकारी प्रधान दलबीर आर्य के नेतृत्व में दल–बल के साथ पहुँची। जिसमें लगभग दस गांव के साथी शामिल रहे। उपप्रधान जयवीर सोनी, विनोद आर्य, सन्नी आर्य, सुभाष आर्य आदि मुख्य रहे।

आर्य समाज हिसार का विशेष आभार :– हरियाणा सरकार के पूर्वमंत्री आर्य नेता चौ. हरिसिंह सैनी के संरक्षण में संचालित आर्य समाज नागौरी गेट हिसार की ओर से प्रधान चौ. बदलूराम, मंत्री श्री देवेन्द्र सैनी व कोषाध्यक्ष सेठ बजरंग लाल गोयल व पूरी कार्यकारिणी की सहमति से कार्यक्रम हेतु एक लाख रुपये दिये गये जिनसे भजनोपदेशकों का सम्मान किया गया। इसके लिए स्वामी आर्यवेश जी ने समस्त अधिकारियों का आभार प्रकट किया।

ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आश्रम के लिए की एक लाख की घोषणा :– आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह ने आश्रम के निर्माण हेतु एक लाख रुपये व भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के लिए 25 हजार रुपये के सहयोग की घोषणा की। स्वामी आर्यवेश जी व श्री सतपाल मधुर जी ने ठाकुर साहब का धन्यवाद ज्ञापित किया।

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् ने की आगामी कार्यक्रमों की घोषणा :– कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौ. हरिसिंह सैनी जी ने कार्यक्रम से प्रभावित होकर आगामी जनवरी, 2017 के कार्यक्रम को अपने खर्चे पर आर्य समाज हिसार में करवाने की घोषणा की जिसे भजनोपदेशक परिषद् की कार्यकारिणी ने भी स्वीकृति प्रदान कर दी। जबकि जुलाई में यही कार्यक्रम आर्य समाज बड़ा बाजार कलकत्ता मे डॉ. कैलाश कर्मठ जी के आग्रह पर करने का निर्णय लिया गया।

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के तत्वावधान एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन के आमंत्रण पर आयोजित यह प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मान समारोह अपने द्वारा अब तक बनाये गये सभी कीर्तिमान लांघकर हर दृष्टि से ऐतिहासिक रहा। स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य के कुशल संयोजन में सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के पदाधिकारियों सर्वश्री सत्यपाल मधुर प्रधान, श्री कैलाश कर्मठ महामंत्री व श्री नरेश दत्त आर्य कोषाध्यक्ष, श्री सहदेव बेधड़क उपप्रधान व श्री कुलदीप आर्य वरिष्ठ सदस्य आदि ने नवोदित भजनोपदेशकों का समय–समय पर मार्गदर्शन भी किया। भोजन, आवास व सम्मान की व्यवस्था आचार्य सन्तराम, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, वैद्य शिरोमणि आर्य, कुलविन्द्र आर्य आदि ने बड़ी कुशलता के साथ सम्भाली। आर्य समाज नरवाना, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, आर्य समाज हिसार, श्री ऋषिपाल व जगदीश आर्य, श्री रामचन्द्र ठेकेदार, श्री महावीर सिंह ठेकेदार, श्री बलवान सिंह–टिटौली आदि का विशेष आर्थिक सहयोग रहा।

कार्यक्रम के अन्त में परिषद् की ओर से पं. सत्यपाल मधुर ने स्वामी आर्यवेश जी व उनके सभी साथियों का विशेष आभार व्यक्त किया तथा स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर

सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण

20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अतः सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने–कोने से आर्यजन अपनी–अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान–सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री–सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष–सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 08–09 जनवरी, 2016
प्रकाशन की तिथि : 7 जनवरी, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
7 से 13 जनवरी, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

सब यज्ञों का महान् तत्त्व विश्वतोधार होना

स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्या रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारँ सुविद्वा सो वितेनिरे।।

—यजु० १७/६८, अथर्व० ४/१४/४

ऋषिः—भृगुः।। देवता—आज्यम्।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हमारे सब यज्ञ 'विश्वतोधार' होने चाहिएँ, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार–कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े–बड़े स्वार्थ–त्याग तक करते हैं,पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरुद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित' के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए, प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, वितत होता है, व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वतोधार' रूप को संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे वितत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान्' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करने वालों को 'स्वः' का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीज़ों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर–ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय–प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते हैं।

शब्दार्थ—**ये**=जो **सुविद्वांसः**=उत्तम ज्ञानी महापुरुष **विश्वतोधारं यज्ञम्**=विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करने वाले यज्ञ को **वितेनिरे**=विस्तृत करते हैं वे **स्वः यन्तः**=आनन्दमय स्थिति को जाते हुए **न अपेक्षन्त**=किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, **रोदसी**=वे द्यावापृथिवी को लाँघकर **द्याम्**=द्युलोक में **आरोहन्ति**=चढ़ जाते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य विद्वत्मण्डल के सम्मान के भावपूर्ण दृश्य

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।